विश्व हिंदी समाचार

Vishwa Hindi Samachar

विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक सूचना-पत्र

वर्ष : 13 | अंक : 52 | दिसंबर , 2020

अंतरराष्ट्रीय कवि सम्मेलन

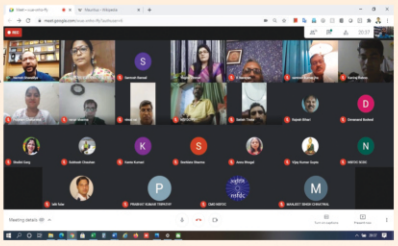

31 अक्टूबर, 2020 को न्यू मीडिया सृजन संसार ग्लोबल फ़ाउंडेशन के सहयोग से सृजन ऑस्ट्रेलिया अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका एवं नेशनल शेड्यूल कास्ट फ़ाइनेंस एंड डेवलपमेंट कॉरपोरेशन के संयुक्त तत्वावधान में एक अंतरराष्ट्रीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया।

पृ. 2

'हिंदी साहित्य पर महात्मा गांधी और गौतम बुद्ध का प्रभाव' विषयक अंतरराष्ट्रीय ई-संगोष्ठी

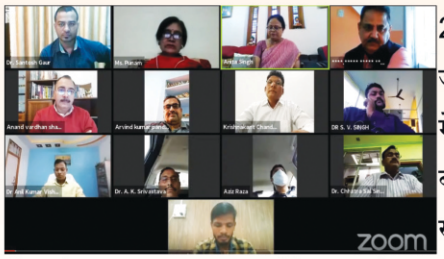

21 अक्टूबर, 2020 को जवाहरलाल नेहरू मेमोरियल पीजी कॉलिज, बाराबंकी द्वारा 'हिंदी साहित्य पर महात्मा गांधी और गौतम बुद्ध का प्रभाव' विषयक अंतरराष्ट्रीय ई-संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

पृ. 4

साहित्य एवं कला महोत्सव 'विश्वरंग-2020'

6-8 नवम्बर, 2020 को ब्रिटेन में टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल तथा वातायन यू.के. संस्था ने वैश्विक हिंदी परिवार और यू.के. हिंदी समिति के सहयोग से तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय साहित्य एवं कला महोत्सव 'विश्वरंग-2020' का आयोजन किया, जिसमें विश्व के 16 देशों ने भाग लिया।

पृ. 4-5

'गांधी की प्रासंगिकता' विषय पर साहित्य संवाद गोष्ठी

13 अक्टूबर, 2020 को भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस, इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र तथा साहित्य संवाद समिति के तत्वावधान में इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के सभागार, फ़ेनिक्स, मॉरीशस में 'गांधी की प्रासंगिकता' विषय पर साहित्य संवाद का आयोजन किया गया।

पृ. 6

व्यंग्य-संग्रह 'अब तक 75' का लोकार्पण

11 अक्टूबर, 2020 को मध्य प्रदेश लेखक संघ के तत्वावधान में इंडिया नेट बुक्स, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित देश के व्यंग्यकारों का व्यंग्य-संग्रह 'अब तक 75' का लोकार्पण अतिथियों द्वारा किया गया। व्यंग्य-संकलन का सम्पादन श्री लालित्य ललित और श्री हरीश कुमार सिंह द्वारा किया गया।

पृ. 11

अटल बिहारी वाजपेयी साहित्य सम्मान 2020

24 दिसंबर, 2020 को गंगाशील आयुर्वेदिक महाविद्यालय, उत्तर प्रदेश में अखिल भारतीय साहित्य परिषद्, ब्रज प्रांत बरेली के तत्वावधान में पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की जयंती के उपलक्ष्य में उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष व साहित्यकार डॉ. सदानंद प्रसाद गुप्त को 'अटल बिहारी वाजपेयी साहित्य सम्मान 2020' प्रदान किया गया।

पृ. 11-12

गोवा की पूर्व राज्यपाल श्रीमती मृदुला सिन्हा का निधन

18 नवम्बर, 2020 को प्रसिद्ध साहित्यकार व राजनेता श्रीमती मृदुला सिन्हा का 77 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आप सुविख्यात हिंदी लेखिका होने के साथ-साथ भारतीय जनता पार्टी की केन्द्रीय कार्यसमिति की सदस्या रहीं तथा गोवा के राज्यपाल पद पर थीं। विश्व हिंदी सचिवालय की ओर से दिवंगत आत्मा को भावभीनी श्रद्धांजलि।

पृ. 13

इस अंक में आगे पढ़ें :

संगोष्ठी/वेबिनार/ऑनलाइन गोष्ठी/जयंती/कार्यक्रम	पृ. 2-8	पुरस्कार एवं सम्मान	पृ. 11-12	संपादकीय	पृ.15-16
लोकार्पण	पृ.8-11	श्रद्धांजलि	पृ. 13-14	सूचना	पृ. 16

ISSN 16942485

संगोष्ठी / वेबिनार / ऑनलाइन गोष्ठी / जयंती / कार्यक्रम

फ़िजी विश्वविद्यालय द्वारा हिंदी दिवस 2020

14 अक्टूबर, 2020 को पंडित विष्णु देव मेमोरिअल हॉल, फ़िजी विश्वविद्यालय, सवेनी लुतोका में विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस के सहयोग से हिंदी दिवस का भव्य आयोजन किया गया। भाषा, साहित्य और संचार विभाग ने हिंदी भाषा को बढ़ावा देने के लिए कुछ रचनात्मक गतिविधियाँ आयोजित कीं। प्रथम गतिविधि के अंतर्गत 'प्रगतिशील भविष्य और हिंदी' विषय पर गोलमेज़ चर्चा का आयोजन हुआ, जिसमें सभी वक्ताओं ने अपने विचार प्रस्तुत किए तथा भविष्य की योजनाओं पर बात की। द्वितीय गतिविधि के दौरान हिंदी साहित्य पर पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित हुई, जिसमें विश्वविद्यालय के कई हिंदी छात्रों ने भाग लिया। प्रतियोगिता के विजेताओं को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार तथा दो सांत्वना पुरस्कार भी प्रदान किए गए। तृतीय गतिविधि स्वरचित कविता-पाठ प्रतियोगिता रही, जिसमें हिंदी के सभी विद्यार्थियों ने भाग लिया। विजेताओं को प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार दिए गए।

फ़िजी विश्वविद्यालय से मनीषा रामरक्खा की रिपोर्ट

हिंदी स्पीकिंग यूनियन, मॉरीशस द्वारा हिंदी दिवस का आयोजन

24 अक्टूबर, 2020 को ओक्ताव विये सभागार, रेज्वी में हिंदी स्पीकिंग यूनियन द्वारा भव्य रूप से हिंदी दिवस मनाया गया। मॉरीशस गणराज्य के राष्ट्रपति, महामहिम श्री पृथ्वीराज सिंह रूपन मुख्य अतिथि तथा मॉरीशस के ओपन यूनिवर्सिटी के महानिदेशक, डॉ. कविराज सुकों विशिष्ट अतिथि रहे। इस अवसर पर हिंदी भाषा एवं हिंदी साहित्य की 10वीं व 12वीं कक्षा के 10 श्रेष्ठ विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में रंगभूमि टोली द्वारा एक नाटक का मंचन किया गया। उपप्रधान मंत्री व शिक्षा, तृतीयक शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री माननीया श्रीमती लीला देवी दुकन-लछुमन, मॉरीशस गणराज्य के गृह-सचिव श्री ओम कुमार देबीदीन, साथ ही अनेक गणमान्य अतिथियों ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

हिंदी स्पीकिंग यूनियन की रिपोर्ट

अंतरराष्ट्रीय कवि सम्मेलन

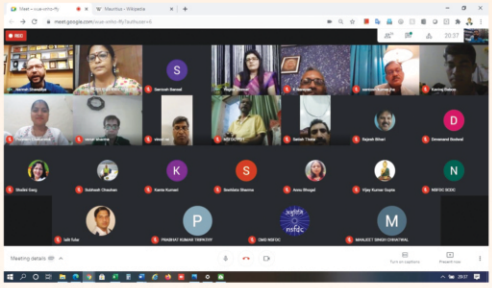

31 अक्टूबर, 2020 को न्यू मीडिया सृजन संसार ग्लोबल फ़ाउंडेशन के सहयोग से सृजन ऑस्ट्रेलिया अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका एवं नेशनल शेड्यूल कास्ट फ़ाइनेंस एंड डेवलपमेंट कॉरपोरेशन के संयुक्त तत्वावधान में एक अंतरराष्ट्रीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया।

इस अंतरराष्ट्रीय कवि सम्मेलन का संयोजन राजभाषा प्रबंधक आदरणीय श्रीमती अर्चना मेहरा ने किया। कवि सम्मेलन में दिल्ली से श्रीमती संतोष बंसल, जयपुर से श्रीमती योगिता 'ज़ीनत', मॉरीशस से डॉ. शशी दुकन, दोहा, कतर से श्रीमती शालिनी गर्ग, लखनऊ से श्री प्रशांत चतुर्वेदी, ओमान से श्रीमती सुनंदा तिवारी, मॉरीशस से श्री कविराज बाबू आदि कवियों एवं कवयित्रियों ने काव्य-पाठ किया। कार्यक्रम के संरक्षक के रूप में नेशनल शेड्यूल कास्ट फ़ाइनेंस एंड डेवलपमेंट कॉरपोरेशन, दिल्ली के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक माननीय के. नारायण, सुप्रसिद्ध कवि एवं सृजन ऑस्ट्रेलिया अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका के प्रधान संपादक डॉ. शैलेश शुक्ला, अध्यक्ष के रूप में प्रख्यात साहित्यकार श्री नरेश शांडिल्य और प्रमुख कवि के रूप में प्रख्यात कवि एवं रेल मंत्रालय के कन्टैनर कोरपोरेशन के कार्यकारी निदेशक श्री संतोष कुमार झा की उपस्थिति रही।

साभार : सृजन ऑस्ट्रेलिया अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका का फ़ेसबुक पृष्ठ

अंतरराष्ट्रीय वेब कवि गोष्ठी

15 नवंबर, 2020 को वैश्विक हिंदी परिवार द्वारा केंद्रीय हिंदी संस्थान तथा विश्व हिंदी सचिवालय के तत्वावधान में अंतरराष्ट्रीय कवि गोष्ठी आयोजित की गई। प्रथम सत्र साहित्यिक संदर्भ के अंतर्गत दीपावली अंतरराष्ट्रीय काव्य गोष्ठी आयोजित हुई। कार्यक्रम के अंतर्गत सिंगापुर से श्रीमती आराधना झा श्रीवास्तव, ऑस्ट्रेलिया से श्रीमती रेखा राजवंशी, भारत से श्री राजेश चेतन, ब्रिटेन से श्री निखिल कौशिक, भारत से श्रीमती अलका सिन्हा, अमेरिका से श्री अनूप भार्गव, बर्मिंघम से वंदना मुकेश, भारत से श्री नरेश शांडिल्य, ब्रिटेन से डॉ. पद्मेश गुप्त, भारत से श्री अनिल जोशी, कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री लक्ष्मीशंकर बाजपेयी तथा केंद्रीय हिंदी संस्थान की निदेशिका प्रो. मीरा शर्मा ने काव्य-पाठ किया। समारोह का संचालन डॉ. पद्मेश गुप्त तथा धन्यवाद-ज्ञापन प्रो. राजेश कुमार ने किया।

द्वितीय सत्र 'चिंतन और दर्शन - आत्मदीप्ति का आलोक' पर आधारित रहा। वक्ता के रूप में स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र, भारतीय कौंसलावास, डरबन, दक्षिण अफ़्रीका से डॉ. चैतन्य प्रकाश एवं वरिष्ठ मीडियाकर्मी एवं भाषाविद् श्री राहुल देव उपस्थित थे।

साभार : वैश्विक हिंदी परिवार का फ़ेसबुक पृष्ठ

'सिविल सेवा परीक्षा और हिंदी माध्यम' विषयक राष्ट्रीय वेबिनार

22 नवंबर, 2020 को नई दिल्ली के भारतीय मनोनैतिक शिक्षा और संस्कृति को समर्पित संस्थान 'प्रज्ञानम इंडिका' द्वारा 'सिविल सेवा परीक्षा और हिंदी माध्यम' विषयक एक दिवसीय राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री अतुल कोठारी, राष्ट्रीय सचिव, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास

ने की। कार्यक्रम के संयोजक एवं 'प्रज्ञानम इंडिका' के संस्थापक निदेशक प्रो. निरंजन कुमार ने विषय प्रवर्तन करते हुए कहा कि देश में सुचारु रूप से व्यवस्था चलाने में संघ लोक सेवा आयोग का महत्वपूर्ण योगदान है। आई.ए.एस. गंगा सिंह ने अभ्यर्थियों द्वारा हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं को अभ्यर्थियों के पिछड़ने के पीछे प्राय: विभिन्न अभावों का कारण माना। आई.ए.एस. निशांत जैन ने कहा कि हिंदी माध्यम के अभ्यर्थियों में प्रतिभा की कमी नहीं होती, बल्कि वे अपेक्षाकृत सामाजिक रूप से अधिक प्रतिबद्ध होते हैं।

साभार : 'प्रज्ञानम इंडिका' संस्थान की रिपोर्ट

'गांधी और विश्व' पर दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय वेबिनार

1-2 अक्टूबर, 2020 को विश्व मामलों की भारतीय परिषद् द्वारा महात्मा गांधी की 150 वीं जयंती के उपलक्ष्य में 'गांधी और विश्व' पर दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। इस वेबिनार में भारत और 14 अन्य देशों के 25 विद्वानों ने भाग लिया। वेबिनार के दौरान वार्तालाप, एक पुस्तक चर्चा, गांधी कथा तथा विभिन्न विषयों पर चर्चाएँ हुईं।

उद्घाटन सत्र में डॉ. टी.सी.ए. राघवन ने स्वागत-भाषण दिया। इसके बाद विवेकानंद इंटरनेशनल फ़ाउंडेशन, नई दिल्ली के निदेशक डॉ. अरविंद गुप्त और भारतीय उन्नत अध्ययन संस्थान (आई.आई.ए.एस.), शिमला के प्रोफ़ेसर और निदेशक डॉ. मकरंद परांजपे के बीच '21वीं सदी में महात्मा गांधी : एक नई लहर' पर चर्चा हुई।

पहला सत्र 'गांधी और उनके समकालीन' विषय पर आधारित था। अध्यक्षता विवेकानंद इंटरनेशनल फ़ाउंडेशन, नई दिल्ली के निदेशक डॉ. अरविंद गुप्त ने की। डॉ. वी. रघुपति ने 'गांधी और मार्टिन लूथर किंग जूनियर' पर व्याख्यान दिया। डॉ. मकरंद परांजपे ने 'गांधी और स्वामी विवेकानंद' पर और केप टाउन विश्वविद्यालय, दक्षिण अफ़्रीका के प्रोफ़ेसर डॉ. इमरान कोवडिया ने 'गांधी, मंडेला, टॉलस्टॉय : बीसवीं शताब्दी में कट्टरपंथी परंपरा' पर व्याख्यान दिया।

'गांधी और विश्व विभिन्न भौगोलिक क्षेत्र' विषय पर आयोजित दूसरे सत्र को दो भागों में विभाजित किया गया था। पहले भाग में 'गांधी और स्वामी विवेकानंद' की अध्यक्षता डॉ. मकरंद परांजपे की थी और पैनल के सदस्यों में ताशकंद स्टेट इंस्टिट्यूट ऑव ओरिएंटल स्टडीज़, ताशकंद, उज़्बेकिस्तान के व्याख्याता श्री पुलातोव शेरदोर नेमात्जोनोविच ने 'मध्य एशिया और विशेष रूप से उज़्बेकिस्तान पर महात्मा गांधी के सामाजिक-दार्शनिक विचारों के प्रभाव' पर वार्ता प्रस्तुत की। साउथ एशिया स्टडीज़ प्रोग्राम, नेशनल यूनिवर्सिटी ऑव सिंगापुर (एन.यू.एस.), सिंगापुर के प्रोफ़ेसर और प्रमुख, डॉ. राजेश राय ने 'गांधी, दक्षिण पूर्व एशिया और भारतीय प्रवासी' पर व्याख्यान दिया।

इसके बाद राजदूत पास्कल एलन नाज़रेथ द्वारा लिखी गई पुस्तक 'गांधी : द सोल फ़ोर्स वारियर : रेवोल्यूशनाइज़्ड रिवोल्यूशन एंड स्पिरिचुअलाइज़्ड इट' पर पुस्तक प्रस्तुतीकरण और चर्चा का आयोजन हुआ। डॉ. टी.सी.ए. राघवन ने सत्र का संचालन किया।

अगले पैनल में लैटिन अमेरिका के प्रतिभागी थे। यह 'लैटिन अमेरिका के स्वर' विषय पर आधारित था। इस सत्र की अध्यक्षता राजदूत आर. विश्वनाथन ने की। इस पैनल के सदस्यों में लेखिका और एसोसियाकिया पलास एथेना, ब्राज़िल की संस्थापक डॉ. लिया डिस्किन ने 'गांधी और सह-अस्तित्व के लिए नैतिकता' पर प्रस्तुति दी। कोस्टा रिका की पूर्व राजनयिक, डॉ. ऑस्कर अल्वारेज़ अराया ने 'गांधी और लैटिन अमेरिका' पर वार्ता प्रस्तुत की। संबंधों अर्जेंटीना अंतरराष्ट्रीय परिषद्, ब्यूनस आयर्स, अर्जेंटीना के डॉ. लिओ रोड्रिगेज़ डे ला वेगा ने 'अमेरिका में शांति स्थापना और प्रयासों में गांधी की पहुँच' पर प्रस्तुति दी और मेक्सिको के राष्ट्रीय स्वायत्त विश्वविद्यालय (यू.एन.ए.एम.), मेक्सिको सिटी, मैक्सिको के इतिहासकार, डॉ. बीट्रिज़ मार्टिनेज़ सावेद्रा ने 'गांधी और लैंगिक समानता : मेक्सिको से एक अध्ययन' पर व्याख्यान दिया।

दूसरा दिन 'गांधी और विश्व : विभिन्न भौगोलिक क्षेत्र' विषय पर दूसरे पैनल के दूसरे भाग के साथ आरंभ हुआ। इस सत्र की अध्यक्षता विदेश मंत्रालय, भारत सरकार के नीति सलाहकार श्री अशोक मलिक ने की और पैनल सदस्यों में कलकत्ता विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर, डॉ. राज शेखर बसु ने 'गांधी और प्रशांत क्षेत्र में अनुबंधित श्रम का प्रश्न : फ़िजी की कथा' प्रस्तुत की। म्यांमार के विद्वान श्री माउंग माउंग ऊ ने 'गांधी और म्यांमार' पर अपने विचार प्रस्तुत किए। कोलंबो विश्वविद्यालय, श्रीलंका के प्रोफ़ेसर डॉ. संदागोमी कोपरहेवा ने 'भाषा पर गांधी के विचार और श्रीलंका की भाषा नीति के निर्माण पर इसके प्रभाव' पर प्रस्तुति की।

'एक वैश्वीकृत विश्व में गांधी अध्ययन' विषय पर आयोजित तीसरे सत्र को भी दो भागों में विभाजित किया गया था। पहले भाग की अध्यक्षता कलकत्ता विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर डॉ. राज शेखर बसु ने की और पैनल सदस्यों ने 'गांधी की अहिंसा और न्याय के सिद्धांत' पर प्रस्तुति दी। एशियाटिक सोसाइटी, कोलकाता के डॉ. अरुण बंदोपाध्याय ने 'गांधी के पर्यावरणवाद' विषय पर एक प्रस्तुति दी। इंडिया डेस्क, आई.एस.एम.ई.ओ., रोम; सैपनिज़ा विश्वविद्यालय, रोम, इटली के पूर्व प्रोफ़ेसर श्री फ़ैबियो स्कियलपी ने 'महात्मा गांधी और विश्व संस्थापक नैतिक सिद्धांत : समकालीन प्रासंगिकता' पर वार्ता प्रस्तुत की। रूस से डॉ. गैलिना एलेक्सेवा ने 'गांधी और भारत जैसा यस्नाया पोलियाना में टॉल्स्टॉय के निजी पुस्तकालय में परिलक्षित होता है' पर व्याख्यान दिया।

अंतिम पैनल चर्चा 'एक वैश्विक दुनिया में गांधी अध्ययन' विषय पर आधारित तीसरे सत्र को दो प्रस्तुतियों और एक गांधी कथा में विभाजित किया गया था। सत्र की अध्यक्षता डॉ. अरुण बंदोपाध्याय ने की। डॉ. पापिया सेनगुप्त ने 'सत्याग्रह, सत्य और संचार : मिथ्या समाचार के समय में गांधी' पर अपने विचार प्रस्तुत किए। समापन-सत्र में डॉ. टी.सी.ए. राघवन, महानिदेशक, आई.सी.डब्ल्यू.ए. ने उद्घाटन टिप्पणी की। भारत के माननीय उपराष्ट्रपति और आई.सी.डब्ल्यू.ए. के अध्यक्ष श्री एम. वेंकैया नायडू ने आई.सी.डब्ल्यू.ए. द्वारा की गई पहल की सराहना की और दो दिवसीय कार्यक्रम में अपने विचार और अनुभव प्रस्तुत करने वाले 14 देशों और भारत के वक्ताओं को बधाई दी।

विश्व मामलों की भारतीय परिषद् के वेबसाइट से साभार

'हिंदी साहित्य पर महात्मा गांधी और गौतम बुद्ध का प्रभाव' विषयक अंतरराष्ट्रीय ई-संगोष्ठी

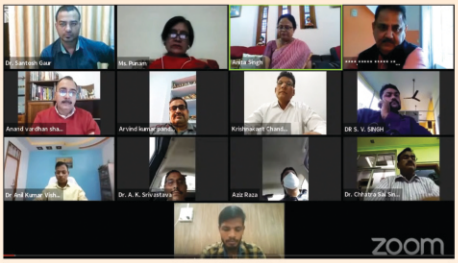

21 अक्टूबर, 2020 को जवाहरलाल नेहरू मेमोरियल पीजी कॉलिज, बाराबंकी द्वारा 'हिंदी साहित्य पर महात्मा गांधी और गौतम बुद्ध का प्रभाव' विषयक अंतरराष्ट्रीय ई-संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता नीदरलैंड में हिंदी यूनीवर्स फ़ाउंडेशन की निदेशिका डॉ. पुष्पिता अवस्थी ने की। उन्होंने कहा कि गांधी एक समय का नाम है अब पूरे विश्व में। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव प्रो. विनोद कुमार मिश्र ने कहा कि गांधी का जो हिंदी के प्रति विशेष प्रेम था उसके पीछे ये ही कारण था कि वे चाहते थे कि हिंदी के माध्यम से समस्त भारत वासियों को एक सूत्र में बाँधने का कार्य किया जाए। ये ही कारण है कि हिंदी साहित्य और साहित्यकार उनके अधिक निकट आ गये और उन्होंने अपनी रचनाओं के सृजन में गांधी के आदर्श, उनके विश्वास, उनके दर्शन को प्रसंग के अनुरूप चित्रित किया।

संगोष्ठी के आरंभ में श्रीमती अनीता सिंह ने सभी वक्ताओं एवं संगोष्ठी से जुड़े सभी लोगों का स्वागत किया। श्री कृष्णकांत चंद्र ने विस्तार रूप से विषय प्रवर्तन करते हुए बौद्धकालीन समाज का चित्रण किया। सोफ़िया विश्वविद्यालय, भारत शास्त्र विभाग, आइ.सी.सी.आर. चेयर पर विज़िटिंग प्रोफ़ेसर डॉ. आनंद वर्धन शर्मा ने अपने वक्तव्य में बताया कि साहित्य की सहायता से विदेशों में भी गांधी के आदर्शों का अनुसरण किया जाता है। डॉ. उमापति दीक्षित, अध्यक्ष, नवीकरण एवं भाषा प्रसार केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा ने कहा कि बुद्ध और गांधी द्वारा बताया गया सन्मार्ग हमको अनादिकाल तक प्रेरित करता रहेगा। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अनिल कुमार विश्वकर्मा तथा धन्यवाद-ज्ञापन डॉ. सहदेव विक्रांत सिंह ने किया।

साभार : जवाहरलाल नेहरू मेमोरियल पीजी कॉलिज, बाराबंकी का यूट्यूब

साहित्य एवं कला महोत्सव 'विश्वरंग-2020'

6-8 नवम्बर, 2020 को ब्रिटेन में टैगोर विश्वविद्यालय-भोपाल तथा वातायन यू.के. संस्था ने वैश्विक हिंदी परिवार और यू.के. हिंदी समिति के सहयोग से तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय साहित्य एवं कला महोत्सव 'विश्वरंग-2020' का आयोजन किया, जिसमें विश्व के 16 देशों ने भाग लिया।

'वातायन' की संस्थापिका प्रतिष्ठित लेखिका दिव्या माथुर और वातायन की अध्यक्षा श्रीमती मीरा मिश्र-कौशिक के नेतृत्व में तथा डॉ. पद्मेश गुप्त के निर्देशन व संचालन में यह कार्यक्रम संपन्न हुआ। कार्यक्रम में कला और संस्कृति, नृत्य प्रदर्शन, कविता-पाठ, कहानी-पाठ, विचार-विमर्श और चलचित्र की प्रस्तुति हुई।

6 नवंबर, 2020 को इस कार्यक्रम का शुभारंभ रविंद्रनाथ टैगोर की मूर्ति पर पुष्पांजलि/श्रद्धांजलि से हुआ। तत्पश्चात् श्री संतोष चौबे ने दीप-प्रज्वलित कर 'विश्वरंग-यू.के.' का उद्घाटन किया और 'विश्वरंग' की पृष्ठभूमि के विषय में विस्तार से बताया। उद्घाटन-सत्र में यू.के. में भारतीय मूल के सांसद श्री वीरेंद्र शर्मा एवं भारतीय विद्या भवन के निदेशक डॉ. नंदा कुमार ने अपने संदेश में आयोजकों का मनोबल बढ़ाया। डॉ. पद्मेश गुप्त ने बताया कि दर्शक विश्वरंग-यू.के. द्वारा आयोजित कला और संस्कृति के अकादमिक सत्रों के माध्यम से भारतीय संस्कृति के परिदृश्य से परिचित होंगे और यहाँ के हिंदी साहित्यकारों के कृतित्व पर प्रकाश डाला जाएगा तथा कुछ प्रतिष्ठित और नवोदित कलाकारों की प्रतिभाओं का अवलोकन किया जाएगा। श्रीमती मीरा मिश्र-कौशिक ने प्रवासी हिंदी साहित्य पर अपने विचार प्रकट करते हुए अपना स्वागत-वक्तव्य प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम में तबला-वादन, कत्थक नृत्य और ग़ज़ल-गायन भी हुआ। साथ ही, श्री आशीष मिश्र द्वारा संचालित कवि-गोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसमें श्रीमती तिथि दानी, डॉ. अजय त्रिपाठी, डॉ. निखिल कौशिक, श्रीमती ज़किया ज़ुबैरी, डॉ. वंदना मुकेश और डॉ. पद्मेश गुप्त ने कविता-पाठ किया। समापन वक्तव्य के माध्यम से कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के वरिष्ठ प्राध्यापक प्रो. ऐश्वरज कुमार ने सभी वक्ताओं के प्रति अपना आभार व्यक्त किया।

7 नवंबर, 2020 के कार्यक्रम के अंतर्गत इंदु बरोत द्वारा संचालित सत्र में यू.के. की कुछ प्रतिष्ठित लेखिकाओं की चयनित कहानियों की समीक्षा व पाठन हुआ, जिसमें डॉ. अरुणा अजितसरिया द्वारा ऋचा जैन की कविताओं की समीक्षा, शन्नो अग्रवाल द्वारा कादम्बरी मेहरा के उपन्यास 'निष्प्राण गवाह' की समीक्षा तथा मनीषा कुलश्रेष्ठ और मधु चौरसिया द्वारा शिखा वार्ष्णेय के 'देसी चश्मे से लंदन की डायरी' पर समीक्षा हुई। इस अवसर पर डॉ. पद्मेश गुप्त ने श्री तरुण कुमार द्वारा संपादित ब्रिटेन के प्रवासी रचनाकारों के नव प्रकाशित संग्रह 'प्रवासी मन' का दर्शकों से परिचय कराया।

8 नवंबर, 2020 के कार्यक्रम का कुशल और मनमोहक संचालन श्रीमती अंतरीपा ठाकुर-मुखर्जी, एफ़.आर.एस.ए. और अकादमी-यू.के. प्रवर्धन प्रमुख ने किया। श्रीमती अर्चना पैन्यूली ने उषा राजे सक्सेना के कहानी-संकलन 'वह रात' पर, श्री तेजेन्द्र शर्मा के साहित्य पर श्री पियूष द्विवेदी ने, दिव्या माथुर के साहित्य पर श्री अनिल शर्मा जोशी व तितिक्षा शाह ने, श्री

अनिल शर्मा जोशी ने मोहन राणा की कविताओं पर, ममता गुप्त ने डॉ. अचला शर्मा के रेडियो-नाटकों पर तथा सोआस-लंदन यूनिवर्सिटी से प्रो. फ्रांचेस्का ओरसिनी ने प्रो. श्याम मनोहर पांडे के कृतित्व और शेफ़ाली फ़ॉस्ट की कविताओं पर अपने व्याख्यान दिए। श्रीमती अंतरीपा ठाकुर-मुखर्जी ने समारोह का संचालन किया तथा डॉ. संतोष चौबे ने आभार व्यक्त किया।

श्रीमती दिव्या माथुर की रिपोर्ट

साहित्य सम्मेलन द्वारा आयोजित अंतरराष्ट्रीय वेबिनार

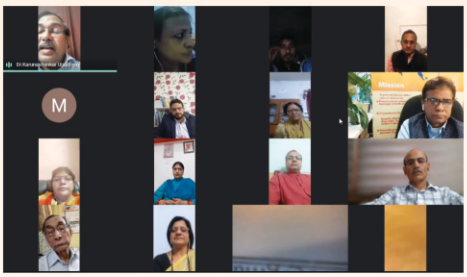

2 नवंबर, 2020 को बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन, भारतीय-रूसी मैत्री संघ दिशा, मास्को तथा जापान हिंदी कल्चरल सेंटर, तोक्यो के संयुक्त तत्वावधान में 'शिक्षा पर वैश्विक आपदा का प्रभाव' विषय पर एक वेब-संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए भारतीय रूसी मैत्री संघ दिशा के अध्यक्ष डॉ. रामेश्वर सिंह ने कहा कि कोविड-19 की आपदा से समग्र संसार पीड़ित है। इससे न केवल जन-धन की हानि हुई है, बल्कि इसका दुष्प्रभाव जीवन के हरेक क्षेत्र पर पड़ा है और शिक्षा-व्यवस्था को सब से बड़ा आघात पहुँचा है। अन्य राष्ट्रों की भाँति रूस में भी शिक्षा पर बुरा प्रभाव पड़ा है। संगोष्ठी के मुख्य वक्ता तथा मुंबई विश्वविद्यालय में हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय ने अपनी चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि भारत में ऑनलाइन शिक्षा के लिए आधारभूत संरचना का घोर अभाव है। ग्रामीण क्षेत्रों में मात्र 15 प्रतिशत विद्यार्थियों के पास स्मार्ट-फ़ोन या लैपटॉप उपलब्ध हैं। 30 प्रतिशत विद्यार्थी भी कक्षा में उपस्थित नहीं होते हैं। पीट्सबर्ग, अमेरिका से प्रकाशित हिंदी मासिक पत्रिका 'सेतु' के मुख्य संपादक श्री अनुराग शर्मा ने अमेरिका में कोरोना के प्रभाव की चर्चा करते हुए कहा कि शिक्षा पर अमेरिका में अन्य राष्ट्रों की तुलना में उतना गहरा दुष्प्रभाव इसलिए नहीं हुआ कि वहाँ ऑनलाइन और डिजिटल शिक्षा से संबंधित आधारभूत संरचना पर्याप्त रूप से सुदृढ़ है। लंदन के कवि-लेखक श्री आशीष मिश्र ने कहा कि यहाँ की सरकार शिक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता में रखती है। जापान हिंदी कल्चरल सेंटर, तोक्यो की अध्यक्षा डॉ. रमा शर्मा ने कहा कि जापान में सभी प्रकार की तकनीकी सुविधा उपलब्ध हैं और सभी इसके उपयोग की विधि भी जानते हैं, इसलिए डिजिटल शिक्षा का यहाँ अपेक्षाकृत पर्याप्त लाभ उठाया गया है। किंतु यह विद्यालयी शिक्षा का विकल्प नहीं हो सकता। संगोष्ठी के अध्यक्ष डॉ. अनिल सुलभ ने कहा कि भारतवर्ष जैसे विकासशील राष्ट्र में जहाँ तकनीकी आधारभूत संरचना और उसके प्रायः सभी विभागों में अभाव है, ऑनलाइन शिक्षा खानापूर्ति जैसी सिद्ध हुई है। उन्होंने कहा कि कोई भी आपदा या स्थिति दीर्घकालीन नहीं होती। निकट भविष्य में संसार के लोग इस आपदा से मुक्त भी होंगे और पारंपरिक-शिक्षा पुनः आरंभ होगी। संगोष्ठी में विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन में हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रो. शैलेंद्र कुमार शर्मा और सम्मेलन के साहित्यमंत्री डॉ. भूपेन्द्र कलसी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। संगोष्ठी का संयोजन डॉ. मोनिका देवी ने किया।

डॉ. अनिल सुलभ की रिपोर्ट

वैश्विक ई-संगोष्ठी का आयोजन

24 अक्टूबर, 2020 को वैश्विक हिंदी सम्मेलन के तत्वावधान में 'भारतीय भाषाओं को रोंदता अंग्रेज़ी का साम्राज्यवाद' विषय पर वैश्विक ई-संगोष्ठी का आयोजन किया गया। वैश्विक हिंदी सम्मेलन की संयोजक डॉ. सुस्मिता भट्टाचार्य ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि इस विषय पर विचार-विमर्श करना बहुत आवश्यक है। वैश्विक हिंदी सम्मेलन के निदेशक डॉ. एम. एल. गुप्त 'आदित्य' ने कहा कि आज अंग्रेज़ी अट्टहास करते हुए हमारी तमाम भाषाओं को रोंदते हुए हमारी भाषा-संस्कृति, धर्म-परंपराओं और प्राचीन ज्ञान-विज्ञान को लीलती जा रही है। डॉ. वरुण कुमार, निदेशक, रेलवे बोर्ड, नई दिल्ली ने कहा कि ज्ञान के लिए अंग्रेज़ी पढ़ने का कहीं कोई विरोध नहीं है, लेकिन इसने सभी भारतीय भाषाओं को गौण कर दिया है, कुछ गिने-चुने लोगों की ही भाषा है। भाषा के रूप में अंग्रेज़ी ज्ञान उचित है, लेकिन हमें अपने देश में कार्य करने, व्यवहार करने के लिए जितनी अंग्रेज़ी की ज़रूरत है, उतनी ही रखना चाहिए, लेकिन अनावश्यक प्रयोग, विद्वता एवं पढ़े-लिखे होने की निशानी के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। वरिष्ठ पत्रकार और भारतीय भाषा चिंतक श्री राहुल देव ने कहा कि ज़्यादातर जनता आज बिना जाने अपने बच्चों के लिए अंग्रेज़ी की माँग कर रही है। उनकी सोच को बदलने की ज़रूरत है। उन्हें बताना होगा कि केवल नकल की भाषा से आगे नहीं बढ़ा जा सकता। उन्होंने कहा कि देश में आजकल 'हिंग्लिश' प्रचलित भाषा हो गई है, आज लोग न तो अंग्रेज़ी में अपनी बात कह पा रहे हैं, ना ही देश की या अपनी मातृभाषा में। यह एक अभूतपूर्व संकट है। हिंदी बचाओ मंच के संयोजक प्रो. अमरनाथ ने अपने भाषण में कहा कि समय के साथ-साथ बदलाव होते हैं, लेकिन हमारी संस्कृति, भाषाओं को बचाने की ज़िम्मेदारी भी हमें निभानी होगी। कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद-ज्ञापन डॉ. एम.एल. गुप्त 'आदित्य' ने किया।

वैश्विक हिंदी सम्मेलन मुंबई की रिपोर्ट

वेब संगोष्ठी

1 नवंबर, 2020 को केंद्रीय हिंदी संस्थान तथा विश्व हिंदी सचिवालय के तत्वावधान में वैश्विक हिंदी परिवार द्वारा वेब संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के प्रथम सत्र का विषय 'विश्व हिंदी शिक्षण विमर्श-रूसी संघ में हिंदी शिक्षण' रखा गया था। इस सत्र की मुख्य वक्ता रूसी राजकीय मानविकी विश्वविद्यालय, मॉस्को की हिंदी प्राध्यापिका डॉ. इंदिरा गाज़िएवा रहीं। स्वागत वक्तव्य तथा वक्ताओं का परिचय डॉ. जवाहर कर्नावट ने दिया। विषय प्रवर्तन करते हुए डॉ. राजेश कुमार ने रूस में हिंदी अध्यापन के अपने निजी अनुभव साझा किए तथा हिंदी भाषा को लेकर वहाँ की समृद्ध परंपराओं को उजागर किया। डॉ. इंदिरा गाज़िएवा ने मॉस्को में हिंदी-शिक्षण व पठन के इतिहास को दर्शाया। उन्होंने बताया कि उनके हिंदी छात्र भारतीय संस्कृति को उत्साहपूर्वक त्योहारों के माध्यम से मनाते हैं। उन्होंने बताया कि रूसी विद्यार्थी भारतीय संस्कृति में बहुत रुचि लेते हैं तथा रूस में हिंदी का भविष्य उज्ज्वल है। इस सत्र का संचालन प्रो. राजेश कुमार ने किया।

द्वितीय सत्र का विषय 'भाषा विमर्श शृंखला 12-वैकल्पिक मीडिया की सार्थकता' रखा गया था, जिनके वक्ता माइक्रोसॉफ़्ट भारत के निदेशक श्री बालेन्दु शर्मा दाधीच, मीडियाविद् व भाषाकर्मी श्री राहुल देव तथा वीडियो पत्रकार श्री आलोक जोशी रहे। श्री बालेन्दु शर्मा दाधीच ने अपने विचार व्यक्त करते हुए यूट्यूब पर किए जा रहे कार्यों व उनके विभिन्न लाभों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि यूट्यूब कई लोगों को अपने कॉन्टेंट दिखाने का एक प्लेटफ़ॉर्म दे रहा है। उन्होंने कहा कि यूट्यूब समाचार प्राप्त करने का एक वैकल्पिक माध्यम हो सकता है तथा वह दृश्य व श्रव्य सामग्री के दस्तावेज़ीकरण का एक अद्भुत ज़रिया बनकर उभरा है। उन्होंने कॉन्टेंट के नवीनीकरण पर काफ़ी बल दिया।

श्री आलोक जोशी ने अपने द्वारा खड़े किए गए चैनल पर बात की तथा मीडिया के अनेकों लाभों पर ज़ोर दिया। उन्होंने सभी दर्शकों को अपने बच्चों सहित मीडिया से जुड़ने हेतु प्रेरित किया क्योंकि उनका मानना है कि नई पीढ़ी के हाथों में नए ज़माने का नब्ज़ मौजूद है।

श्री राहुल देव ने वैकल्पिक मीडिया की संभावनाओं को सामने रखते हुए उससे जुड़ी चिंताओं पर बात की। उन्होंने वैकल्पिक मीडिया के लाभों व उसकी त्रुटियों पर अपनी विचाराभिव्यक्ति की। उन्होंने कहा "सोशल मीडिया तो अजर-अमर है, क्योंकि कुछ कॉन्टेंट टी.वी. पर न आकर सोशल मीडिया पर आ जाती है।"

केंद्रीय हिंदी संस्थान के उपाध्यक्ष श्री अनिल जोशी ने सभी वक्ताओं की बातों को समाहित किया और अपने विचार व्यक्त किए। इस सत्र का संचालन श्री विजय मिश्र ने किया।

साभार : वैश्विक हिंदी परिवार का फ़ेसबुक पृष्ठ

'गांधी की प्रासंगिकता' विषय पर साहित्य संवाद गोष्ठी

13 अक्टूबर, 2020 को भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस, इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र तथा साहित्य संवाद समिति के तत्वावधान में इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के सभागार, फ़ेनिक्स, मॉरीशस में 'गांधी की प्रासंगिकता' विषय पर साहित्य संवाद का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. अलका धनपत, वरिष्ठ व्याख्याता, महात्मा गांधी संस्थान उपस्थित थी। इस अवसर पर इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र की निदेशिका आचार्य प्रतिष्ठा, विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव प्रो. विनोद कुमार मिश्र तथा उपमहासचिव डॉ. माधुरी रामधारी मंचस्थ थे।

डॉ. अलका धनपत ने गांधी जी के अफ़्रीका प्रवास के दौरान संघर्ष से भारत में उनके आंदोलन एवं उनके संकल्पों पर बहुत ही खोजपूर्ण प्रकाश डाला। उन्होंने अफ़्रीका से भारत वापसी के दौरान गांधी जी द्वारा मॉरीशस को दिए गए दो मंत्रों 'समाज में शिक्षा' एवं 'राजनीति से जुड़ाव' का उल्लेख किया, जिन्होंने मॉरीशस में बदलाव एवं प्रगति की दिशा दिखाई।

इस अवसर पर स्थानीय साहित्यकार श्री मोहनलाल बृजमोहन ने इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र की निदेशिका आचार्य प्रतिष्ठा, विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव प्रो. विनोद कुमार मिश्र एवं कार्यक्रम में उपस्थित श्रोताओं को अपनी दो पुस्तकें भेंट कीं।

श्रीमती अंजू घरभरन की रिपोर्ट

'श्रीमद्भागवत गीता' पर साहित्य संवाद गोष्ठी

24 नवंबर, 2020 को भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस, इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र तथा साहित्य संवाद समिति के तत्वावधान में इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के सभागार, फ़ेनिक्स, मॉरीशस में 'श्रीमद्भागवत गीता' पर साहित्य संवाद का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव प्रो. विनोद कुमार मिश्र ने मुख्य वक्ता के रूप में कल, आज और कल के इस कर्म-ग्रंथ पर प्रत्येक श्रोताओं को आज की वैश्विक स्थिति, धर्म, पुनर्जन्म जैसी अनेक स्थितियों पर मार्गदर्शन देते हुए आत्म-चिंतन हेतु प्रोत्साहित किया। कार्यक्रम में भारतीय उच्चायोग की द्वितीय सचिव (हिंदी एवं संस्कृति) श्रीमती सुनीता पाहूजा भी उपस्थित रहीं।

श्रीमती अंजू घरभरन की रिपोर्ट

महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस में हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में हिंदी सप्ताह

हिंदी दिवस 2020 के उपलक्ष्य में महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस ने 23 से 27 नवंबर 2020 तक हिंदी सप्ताह का आयोजन किया। हिंदी सप्ताह के अंतर्गत स्वरचित कविता-पाठ, आशुवाक, नुक्कड़ नाटक, अंत्याक्षरी, श्रुतलेख तथा पोस्टर प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं।

हिंदी सप्ताह का उद्घाटन २३ नवंबर को महात्मा गांधी संस्थान के सुब्रमण्यम् भारती सभागार में भारतीय उच्चायोग की द्वितीय सचिव श्रीमती सुनीता पाहूजा, आई.सी.सी.आर. हिंदी पीठ डॉ. वेद रमण पाण्डेय, हिंदी विभागाध्यक्ष एसोसिएट प्रोफ़ेसर डॉ. कुमारदत्त गुदारी, एसोसिएट प्रोफ़ेसर डॉ. राजरानी गोबिन तथा स्कूल ऑव इंडोलोजिकल स्टडीज़ के अध्यक्ष डॉ. केवल नायक द्वारा 'ब्रह्मकमल' पौधे को जल अर्पित करते हुए किया गया। हिंदी विभागाध्यक्ष ने अपने स्वागत-भाषण में सभी अतिथियों, प्राध्यापकों और छात्रों का सहृदय स्वागत किया।

स्वरचित कविता-पाठ प्रतियोगिता

23 नवंबर को स्वरचित कविता-पाठ प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। भारतीय उच्चायोग की द्वितीय सचिव श्रीमती सुनीता पाहूजा विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थीं। निर्णायक मंडल में श्रीमती सुनीता पाहूजा, डॉ. राजरानी गोबिन तथा डॉ. केवल नायक थे। प्रतियोगिता की विजेता बी.ए. हिंदी द्वितीय वर्ष की आएशा दामरी रही। द्वितीय पुरस्कार बी.ए. हिंदी तृतीय वर्ष की केशनी फ़ेकू को तथा तृतीय पुरस्कार बी.ए. उर्दू की अनीसा बीबी रजबली को प्राप्त हुआ। मंच-संचालक डॉ. अलका धनपत और श्री गंगाधरसिंह सुखलाल रहे।

आशुवाक प्रतियोगिता

24 नवंबर को आशुवाक प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। इस अवसर पर एम.बी.सी. से डॉ. शशि दुकन तथा विश्व हिंदी सचिवलाय की उपमहासचिव डॉ. माधुरी रामधारी मुख्य अतिथि रहीं। डॉ. शशि दुकन, डॉ. माधुरी रामधारी तथा डॉ. अरविंद बिसेसर निर्णायक मंडल के सदस्य थे। बी.ए. हिंदी तृतीय वर्ष की साक्षी जियान प्रतियोगिता की विजेता बनीं। बी.ए. तृतीय वर्ष की मिलेशा वुसाय को द्वितीय पुरस्कार तथा बी.ए. द्वितीय वर्ष की वैशाली शिवसागर को तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुए। बी.ए. तृतीय वर्ष की यवना लछमन को प्रोत्साहन पुरस्कार मिला और पाँचवा स्थान बी.ए. प्रथम वर्ष की नेमचंद हिमांशी को प्राप्त हुआ। मंच-संचालन डॉ. अंजलि चिंतामणि ने किया।

नुक्कड़ नाटक प्रतियोगिता

25 नवंबर को संस्थान के भारतीय भाषा संकाय के प्रांगण में नुक्कड़ नाटक का आयोजन हुआ। मुख्य अतिथि तथा निर्णायक मंडल के सदस्य के रूप में विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव प्रो. विनोद कुमार मिश्र, आई.सी.सी.आर. हिंदी पीठ डॉ. वेद रमण पाण्डेय तथा पूर्व छात्र व नाट्य-अभिनेता श्री राजेश्वर सितोहल रहे। 'सही गलत का खेल' नुक्कड़ नाटक की प्रस्तुति के लिए बी.ए. तृतीय वर्ष की टोली विजेता बनी। साक्षी जीयान को श्रेष्ठ अभिनेत्री पुरस्कार प्राप्त हुआ। दूसरा पुरस्कार बी.ए. तृतीय वर्ष की दूसरी टोली को मिला, जिनके नाटक का शीर्षक था 'मूर्ति'। तृतीय पुरस्कार बी.ए. उर्दू के छात्रों को प्राप्त हुआ, जिनके नाटक का शीर्षक 'सोच को बुलंद करो' रहा। जिज्ञासा गणेश को श्रेष्ठ निर्देशिका का पुरस्कार प्राप्त हुआ। डॉ. संध्या अंचराज़ -कीनू तथा डॉ. लक्ष्मी झमन ने मंच-संचालन किया।

अंत्याक्षरी प्रतियोगिता

26 नवंबर को शब्द खेल राउंड, धुन राउंड, डम्ब शराद, अनुवाद राउंड आदि में कई टोलियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। श्री जयगणेश दावोसिंह निर्णायक सदस्य थे। प्रथम पुरस्कार बी.ए. तृतीय वर्ष की साक्षी जीयान, जिज्ञासा गणेश और मिष्ठा सिबालक की 'नौटंकी' नामक टोली को प्राप्त हुआ। द्वितीय पुरस्कार बी.ए. द्वितीय वर्ष की शालिनी सुकालू, शिक्षा सुदाय और मेघना श्रीकिसुन की 'नौटंकी गर्ल्स' नामक टोली को प्राप्त हुआ। तृतीय पुरस्कार बी.ए. तृतीय वर्ष की '३ इडियत्स' नामक टोली की छात्राओं को प्राप्त हुआ। इस प्रतियोगिता में छात्रों के अतिरिक्त कई प्राध्यापकों तथा संस्थान के कर्मचारियों व अन्य अतिथियों ने भाग लिया।

श्रुतलेख प्रतियोगिता

हिंदी सप्ताह के उपलक्ष्य में श्रुतलेख प्रतियोगिता का भी आयोजन हुआ। श्रुतलेख प्रतियोगिता में बी.ए., टी.डी.पी., पी.जी.सी.ई. और एम.ए. के छात्रों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। स्नातक स्तर पर प्रथम स्थान शिक्षा धनपत, द्वितीय स्थान मोक्षणा मधु और तृतीय स्थान पूवा देवी रामदीन को प्राप्त हुआ। स्नातकोत्तर स्तर पर जया देवी सुकाली को प्रथम स्थान, खुशबू चुड़ामन को द्वितीय स्थान तथा अश्विनी देवी रामचरण को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ।

पोस्टर प्रतियोगिता

इस वर्ष महात्मा गांधी की 151वीं जयंती तथा महात्मा गांधी संस्थान के 50 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में पोस्टर प्रतियोगिता का विषय इसी पर निर्धारित किया गया। प्रथम पुरस्कार बी. ए. प्रथम वर्ष की पूजा देबी, द्वितीय पुरस्कार पी.जी.सी.ई. की छात्रा छोतीका गोबिन तथा तृतीय पुरस्कार बी.ए. तृतीय वर्ष की हेमा नौगावा को प्राप्त हुआ।

लघु फ़िल्म प्रतियोगिता

इस वर्ष पटकथा लेखन, निर्देशन, अभिनय आदि से संबंधित कौशल विकसित करने के उद्देश्य से पिछले वर्ष पहली बार के लिए लघु फ़िल्म प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कोविद-१९ महामारी के चलते प्रतिबंधन की स्थिति को दर्शाने के लिए फ़िल्म प्रतियोगिता का विषय 'मॉरीशस में प्रतिबंधन और मैं' रखा गया। प्रथम पुरस्कार अनिकेत और उसकी टोली को, द्वितीय पुरस्कार रचना और उसकी टोली को और तृतीय पुरस्कार खुश्बू चुड़ामन व जोषिता देवी घरभरन को प्राप्त हुआ।

'डॉ. बृजचंद मंगर भगत 'मधुकर' साहित्य पुरस्कार 2020' तथा हिंदी सप्ताह पुरस्कार-वितरण-समारोह

हिंदी सप्ताह की गतिविधियों का समापन 27 नवंबर को 'डॉ. बृजचंद मंगर भगत 'मधुकर' साहित्य पुरस्कार 2020' तथा हिंदी सप्ताह 2020 पुरस्कार-वितरण-समारोह के साथ हुआ। मुख्य अतिथि भारतीय उपउच्चायुक्त श्री जनेश केन रहे। 'डॉ. बृजचंद मंगर भगत 'मधुकर' साहित्य पुरस्कार 2020' के अंतर्गत अनेक वर्गों के कवियों के विजेताओं को सम्मानित किया गया।

साभार : युवाज़ – युवा हिंदी की आवाज़,
अंक 7, नवंबर 2020

लोकार्पण

डॉ. अरविन्द कुमार सिंह झा की पुस्तक 'समालोचनाश्री' का लोकार्पण

22 दिसंबर, 2020 को यदुनाथ सार्वजनिक पुस्तकालय, लालगंज, मधुबनी में मैथिली दिवस समारोह के संदर्भ में डॉ. अरविन्द कुमार सिंह झा द्वारा लिखित 'समालोचनाश्री' नामक पुस्तक का लोकार्पण किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि साहित्य अकादेमी के मैथिली प्रतिनिधि प्रो. अशोक अविचल थे तथा अध्यक्षता प्रो. जगदीश मिश्र ने की। इस अवसर पर कई उपस्थित अतिथियों ने लोकार्पित पुस्तक पर चर्चा की तथा अपने विचार व्यक्त किए। मंच-संचालन मैथिली के वरिष्ठ साहित्यकार श्री शैलेंद्र आनंद ने किया और धन्यवाद-ज्ञापन सचिव श्री उदय नाथ मिश्र ने किया। कार्यक्रम में परिसर के अनेक साहित्यकार, मैथिली आंदोलन से जुड़े कार्यकर्ता आदि की उपस्थिति रही।

साभार : स्पाई व्यू न्यूज़.इन

कवयित्री ज्योत्सना कलकल की पुस्तक 'स्वयं से समन्वय की ओर' का लोकार्पण

15 दिसंबर, 2020 को गुरुग्राम में कवयित्री ज्योत्सना कलकल की पुस्तक 'स्वयं से समन्वय की ओर' का लोकार्पण किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा के उपाध्यक्ष श्री अनिल जोशी रहे तथा अध्यक्षता साहित्यकार श्री लक्ष्मी शंकर वाजपेयी ने की। डॉ. मुक्ता, श्री नरेश शांडिल्य, श्रीमती ममता किरण, रेणु हुसैन तथा श्री घमंडीलाल अग्रवाल विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। नेक्टर फ़ेक्टर आर्ट ऑव लिविंग गुरु बेनी किन्हा ने कवयित्री ज्योत्सना कलकल की कविताओं के सही मर्म को अपने शब्दों में व्यक्त किया। श्री लक्ष्मी शंकर वाजपेयी ने कहा कि समाज में बढ़ती नकारात्मकता के बीच यदि 'स्वयं से समन्वय की ओर' पुस्तक को पढ़ा जाए, तो निश्चित ही व्यक्ति आत्महत्या नहीं करेगा। श्री अनिल जोशी ने सभी कविताओं, खास तौर से कविता 'अपना ख्याल रखना' को आज के समय में बहुत प्रासंगिक बताया। कार्यक्रम के दौरान वरिष्ठ साहित्यकार श्री नरेंद्र गौड़, श्री लाडो कटारिया, श्री राज निगम, श्रीमती इंदु निगम, श्री त्रिलोक कौशिक, श्रीमती वीणा अग्रवाल, श्रीमती मीना चौधरी, कैप्टन मदन पूनिया, श्री अशोक ठाकरान समेत कई साहित्य-प्रेमी उपस्थित रहे।

साभार : दैनिक ट्रिब्यून ऑनलाइन.कॉम

काव्य-कृति 'मेनका' का लोकार्पण एवं कवि सम्मेलन

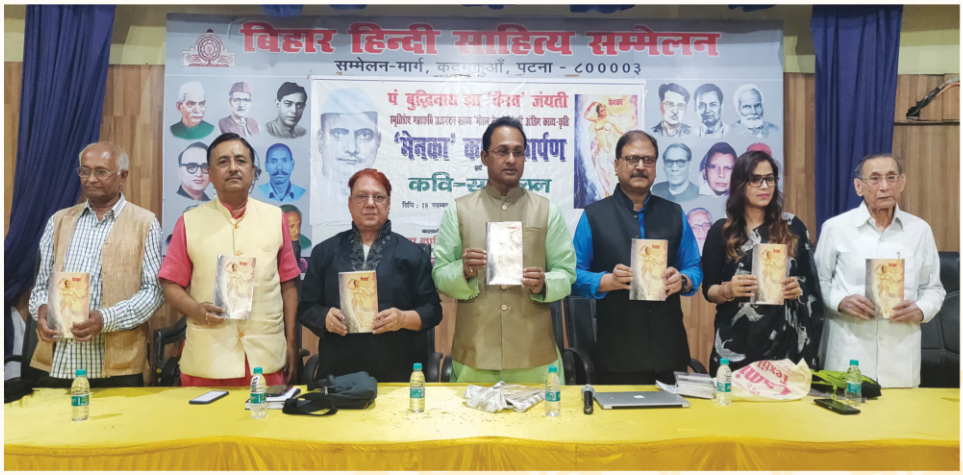

18 नवम्बर, 2020 को बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन, पटना में महाकवि ब्रजनंदन सहाय 'मोहन प्रेमयोगी' की अंतिम काव्य-कृति 'मेनका' का लोकार्पण एवं कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। लोकार्पण समारोह की अध्यक्षता सम्मेलन अध्यक्ष डॉ. अनिल सुलभ ने की। डॉ. सुलभ ने पिछली पीढ़ी के यशमान कवि पं. बुद्धिनाथ झा 'कैरव' को भी उनकी जयंती पर स्मरण करते हुए कहा कि 'कैरव' बहु आयामी प्रतिभा और व्यक्तित्व के कवि, प्रखर साहित्यकार, स्वतंत्रता सेनानी और लोकप्रिय राजनेता थे। महाकवि के पुत्र डॉ. योगेश कृष्ण सहाय ने अपनी स्मृतियों को साझा करते हुए कहा कि विद्वानों ने यह माना है कि महाकवि की 'मेनका' एक कालजयी कृति है। भारत की सांस्कृतिक परम्परा के अनेक उदात्त पहलू भी इसकी विशेषता है। इस अवसर पर आयोजित कवि-सम्मेलन के दौरान सम्मेलन के उपाध्यक्ष डॉ. शंकर प्रसाद ने ग़ज़ल गान किया। कवयित्री रुपम सहाय ने 'मेनका' के एक सर्ग का पाठ किया। वरिष्ठ कवि श्री राज कुमार प्रेमी, डॉ. विनय कुमार विष्णुपुरी, डॉ. सुधा सिन्हा, डॉ. आर प्रवेश, लता प्रासर, श्री जयप्रकाश पुजारी, श्री मनोज उपाध्याय, श्री चितरंजन लाल भारती, ऋतु प्रज्ञा, श्री अमरेन्द्र कुमार, श्रीमती सुलोचना झा, श्री अर्जुन प्रसाद सिंह, श्री अरविंद कुमार, श्री रवीद्र कुमार सिंह, श्री रितेश कुमार आदि कवियों ने भी काव्य-पाठ किया। मंच का संचालन श्री योगेन्द्र प्रसाद मिश्र ने तथा धन्यवाद-ज्ञापन श्री कृष्ण रंजन सिंह ने किया।

डॉ. अनिल सुलभ की रिपोर्ट

'प्रतिनिधि बाल कविता-संचयन' का लोकार्पण

15 अक्तुबर, 2020 को साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित पुस्तक प्रतिनिधि बाल कविता-संचयन का लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि साहित्य अकादेमी केवल हिंदी के ही नहीं, बल्कि सभी भारतीय भाषाओं के बाल साहित्य को सस्ती कीमतों पर उपलब्ध करा रहा है और कराता रहेगा। 'संचयन' के संपादक श्री दिविक रमेश ने कहा कि बाल साहित्य सबके लिए होता है और उसे सभी को पढ़ना चाहिए। उन्होंने कहा कि इस कविता-संग्रह में जहाँ सुभद्रा कुमारी चौहान, सोहनलाल द्विवेदी, द्वारिका प्रसाद महाश्वेरी, श्रीप्रसाद एवं निरंकारदेव सेवक की कविताएँ हैं, तो नए रचनाकारों में दिशा ग्रोवर, सृष्टि पांडेय, सुषमा सिंह की भी कविताएँ हैं। इन कविताओं के चयन में नए प्रयोग और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को सामने रखा गया। समकालीन भारतीय साहित्य के अतिथि संपादक बलराम ने कहा कि साहित्य अकादेमी बाल-साहित्य को सम्मान की दृष्टि से देख रही है और उसके संवर्धन के लिए लगातार प्रयास कर रही है। इस पुस्तक का प्रकाशन अकादेमी के उन्हीं प्रयासों का सुफल है।

साभार : साहित्य अकादेमी की रिपोर्ट

पुस्तक 'भविष्यत' का ऑनलाइन विमोचन

18 अक्टूबर, 2020 को पटना में लेखक श्री अभिलाष दत्त के उपन्यास 'भविष्यत' का ऑनलाइन विमोचन किया गया। पुस्तक का विमोचन करते हुए मुख्य अतिथि प्रो. अनीता राकेश ने कहा कि इस पुस्तक में भारतीय विज्ञान परंपरा नज़र आती है। इस पुस्तक के माध्यम से लेखक ने मनोविज्ञान, पराविज्ञान, सिद्धयोग, सहजयोग, चिकित्साशास्त्र, स्वप्न विज्ञान के पहलुओं को सरल व रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है। विमोचन के अवसर पर समारोह के मुख्य वक्ता फ़िल्मकार प्रशांत रंजन ने कहा कि अभिलाष दत्त का उपन्यास 'भविष्यत' फ़ैंटसी कैटगोरी का होते हुए भी जीवन की कई सच्चाइयों से रूबरू कराता है। इस पुस्तक की पृष्ठभूमि ब्रह्मांड और उसकी सुपरनैचुरल शक्तियों के बारे में हैं। इसके साथ ही लेखक ने पृथ्वी पर व्याप्त प्रदूषण और मानव के लोभ के कारण नष्ट हो रही प्राकृतिक संपदा का भी प्रभावी चित्रण किया है।

साभार : स्वत्व समाचार.कॉम

'चलो हवाओं का रुख़ मोड़ें' के आवरण पृष्ठ का ऑनलाइन लोकार्पण तथा गोष्ठी

23 दिसंबर, 2020 को वाणी प्रकाशन ग्रुप द्वारा प्रकाशित नोबेल शान्ति पुरस्कार से सम्मानित बाल अधिकार कार्यकर्ता श्री कैलाश सत्यार्थी के नए कविता-संग्रह 'चलो हवाओं का रुख़ मोड़ें' के आवरण पृष्ठ का ऑनलाइन लोकार्पण तथा गोष्ठी का आयोजन किया गया। पद्मश्री तथा साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता वरिष्ठ कथाकार उषा किरण खान ने कहा कि कैलाश जी का कविकर्म उनके अंतर की कोमलता का प्रकाशमान रूप है। पद्मश्री तथा साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता, वरिष्ठ कवि व साहित्यकार श्री लीलाधर जगूड़ी ने सत्यार्थी जी की कविताओं पर टिप्पणी करते हुए कहा कि काव्य की सहस्र धाराएँ होती हैं, जिनको हम हिंदी कविता के इतिहास में देख सकते हैं। कवि डॉ. कुमार विश्वास ने सत्यार्थी जी की कविताओं पर कहा कि लोकभाषाओं ने कैलाश की कविताओं को गढ़ा है। वाणी प्रकाशन ग्रुप के प्रबन्ध निदेशक व वाणी फ़ाउंडेशन के चेयरमैन श्री अरुण माहेश्वरी ने कहा कि नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित श्री कैलाश सत्यार्थी के कविता-संग्रह को प्रकाशित करना हमारे लिए गौरव की बात है। नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित बाल अधिकार कार्यकर्ता श्री कैलाश सत्यार्थी ने अपनी रचना प्रक्रिया के बारे में बताते हुए कहा कि कविता के अंदर जो ऊर्जा निहित है, उसमें अनंत संभावनाएँ हैं। वे कहते हैं "मैं मानता हूँ कि मानवीय संवेगों, आवेगों, भावनाओं और आक्रोश में कोई-न-कोई ऊर्जा रहती है और अलग-अलग तरह से लोग उन ऊर्जाओं का इस्तेमाल करते हैं। समाज के हाशिए पर मेरी रचनाधर्मिता के साथ-साथ क्रियाशीलता अहम रही है।" कवि, कलाविद् व आलोचक श्री यतींद्र मिश्र ने समारोह का संचालन किया।

साभार : हिंदी न्यूज़ 18.कॉम

व्यंग्य-संग्रह 'अब तक 75' का लोकार्पण

11 अक्टूबर, 2020 को मध्य प्रदेश लेखक संघ के तत्वावधान में इंडिया नेट बुक्स, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित देश के व्यंग्यकारों का व्यंग्य-संग्रह 'अब तक 75' का लोकार्पण अतिथियों द्वारा किया गया। व्यंग्य-संकलन का सम्पादन श्री लालित्य ललित और श्री हरीश कुमार सिंह द्वारा किया गया।

आयोजन के मुख्य अतिथि विक्रम विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अखिलेश कुमार पांडे तथा विशिष्ट अतिथि डॉ. लालित्य ललित, श्री संजीव कुमार एवं श्री रणविजय राव रहे। सारस्वत अतिथि विक्रम विश्वविद्यालय के कुलानुशासक एवं समालोचक डॉ. शैलेंद्र कुमार शर्मा रहे। समारोह की अध्यक्षता प्रो. हरिमोहन बुधौलिया ने की। मुख्य अतिथि प्रो. अखिलेश कुमार पांडे ने कहा कि त्रासदी काल में इस व्यंग्य संकलन का प्रकाशन उल्लेखनीय घटना है। हास्य और व्यंग्य जीवन के अनिवार्य तत्व हैं तथा व्यंग्य में यह ज़रूरी है कि व्यंग्यकार अपनी बात कह भी दे और किसी को बुरा भी न लगे।

सारस्वत अतिथि डॉ. शैलेन्द्र कुमार शर्मा ने कहा कि अब तक 75 के ज़रिए व्यंग्य की एक मुकम्मल तस्वीर सामने आई है। व्यंग्य विधा का उज्जैन में स्वर्णिम इतिहास रहा है और अनादिकाल से व्यंग्य की समृद्ध परम्परा रही है। पद्मभूषण पंडित सूर्यनारायण व्यास, शरद जोशी और डॉ. शिव शर्मा से लेकर अब तक व्यंग्य की गतिशीलता बनी रही है। संग्रह की अधिकांश रचनाएँ कोविड-19 की विभीषिका से उपजी होकर समकालीनता का बोध कराती हैं।

अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. हरिमोहन बुधौलिया ने कहा कि व्यंग्य-लेखन एक साधना है और उज्जैन के शिव शर्मा जी देश के प्रमुख व्यंग्यकार रहे और यह संकलन, शिव जी को समर्पित कर मालवा की व्यंग्य परम्परा का सम्मान है। विशेष अतिथि श्री लालित्य ललित ने कहा कि अब तक 75 की रचनाओं में विषय का वैविध्य है और देश भर के प्रख्यात व्यंग्यकारों को इसमें सम्मिलित किया गया है। स्वागत भाषण देते हुए सचिव श्री देवेंद्र जोशी ने कहा कि इस संकलन के ज़रिये संपादक द्वय ने देश के व्यंग्यकारों को जोड़ने का कार्य किया है। उज्जैन व्यंग्य की धरा रही है और उसी परम्परा को आगे यह संकलन बढ़ाता है। इंडिया नेट बुक्स के निदेशक श्री संजीव कुमार ने कहा कि उज्जैन व्यंग्य नगरी है और मालवा के व्यंग्यकारों पर संकलन आना आज की आवश्यकता है। व्यंग्यकार श्री रणविजय राव ने कहा कि लॉकडाउन के समय में यह संकलन लेखकीय रचनात्मकता का एक श्रेष्ठ उदाहरण है। कार्यक्रम का संचालन श्री दिनेश दिग्गज ने और आभार श्री पिलकेन्द्र अरोरा ने व्यक्त किया।

साभार : डॉ. शैलेंद्र कुमार शर्मा का ब्लॉग

पुरस्कार एवं सम्मान

अटल बिहारी वाजपेयी साहित्य सम्मान 2020

24 दिसंबर, 2020 को गंगाशील आयुर्वेदिक महाविद्यालय, उत्तर प्रदेश में अखिल भारतीय साहित्य परिषद्, ब्रज प्रांत बरेली के तत्वावधान में पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की जयंती के उपलक्ष्य में उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष व साहित्यकार डॉ. सदानंद प्रसाद गुप्त को 'अटल बिहारी वाजपेयी साहित्य सम्मान 2020' प्रदान किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि राष्ट्र धर्म प्रकाशन के प्रबंधक एवं

वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. पवन पुत्र बादल रहे तथा साहित्यकार डॉ. शिवमंगल सिंह मंगल, राज्य ललित कला अकादमी के पूर्व अध्यक्ष डॉ. राजेंद्र सिंह पुंडीर एवं एन. के. गुप्त विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विभाग कार्यवाह श्री सुरेश ने की। डॉ. सदानंद प्रसाद गुप्त के समारोह में न पहुँच पाने के कारण डॉ. शिवमंगल सिंह मंगल ने उनके प्रतिनिधि के रूप में उनका सम्मान ग्रहण किया। इस अवसर पर वक्ताओं ने स्व. श्री अटल बिहारी वाजपेयी के जीवन पर प्रकाश डाला। समारोह के दौरान डॉ. एन.एल. शर्मा की पुस्तक 'सुंदरकांड में निहित जीवन प्रबंधक के सूत्र' का विमोचन भी किया गया। समारोह में कई साहित्यकारों तथा गण्यमान्य अतिथियों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन श्री रोहित राकेश ने किया तथा आभार-ज्ञापन डॉ. शशि वाला राठी ने किया।

साभार : बरेली लाइव.इन

सम्मान समारोह

12 दिसंबर, 2020 को हिंदी भवन, नई दिल्ली में सविता चड्ढा जन सेवा समिति द्वारा 'शिल्पी चड्ढा स्मृति सम्मान' समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि लोक सभा टी.वी. के एडिटर श्री श्याम किशोर सहाय रहे तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में आधुनिक साहित्य और गगनांचल के संपादक और साहित्यकार डॉ. आशीष कंधवे, सेवानिवृत्त मेट्रोपोलिटन मेजिस्ट्रेट और साहित्यकार श्री ओम प्रकाश सपरा एवं ट्रू मीडिया चैनल के संस्थापक श्री ओम प्रकाश प्रजापति की उपस्थिति रही। इस अवसर पर प्रो. डॉ. लारी आज़ाद को 'हीरों में हीरा सम्मान', श्री घमंडीलाल अग्रवाल को 'साहित्यकार सम्मान', श्रीमती आशा शैली को 'शिल्पी चड्ढा स्मृति सम्मान' तथा पंडित सुरेश नीरव को 'गीतकारश्री सम्मान' से विभूषित किया गया। साथ-साथ देश भर से प्राप्त पुस्तकों में से कुछ पुस्तकों के लेखकों को भी इस अवसर पर सम्मानित किया गया, जिनमें संतोष परिहार को उनकी पुस्तक 'पेड़ चढ़े पहाड़', डॉ. अंजु लता सिंह को 'तारे ज़मीन पर', श्रीमती सूक्ष्म लता महाजन को 'नन्हे मुन्ने', श्रीमती वीणा अग्रवाल को उनकी पुस्तक 'नन्ही काव्या', श्रीमती सुषमा सिंह को उनकी पुस्तक 'नन्हा पाखी' और डॉ. सुधा शर्मा को उनकी पुस्तक 'तेरे चरणों में' शामिल हैं। मंच-संचालन वरिष्ठ कवि श्री अमोद कुमार ने किया।

साभार : डॉ. आशीष कंधवे का फ़ेसबुक पृष्ठ

वातायन यू.के. सम्मान समारोह

21 नवंबर, 2020 को लंदन में वातायन यू.के. का वार्षिक समारोह आयोजित हुआ। इस वर्ष प्रख्यात लेखक एवं भारत के शिक्षा मंत्री, डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' को वातायन के 'वातायन अंतरराष्ट्रीय शिखर सम्मान' और प्रसिद्ध गीतकार, पटकथा और संवाद लेखक श्री मनोज मुंतशिर को 'वातायन अंतरराष्ट्रीय कविता सम्मान' से सम्मानित किया गया।

डॉ. पद्मेश गुप्त ने सम्मानित विभूतियों का परिचय देते हुए कहा कि इस वर्ष अंतरराष्ट्रीय शिखर सम्मान को स्वीकार कर डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' ने वातायन परिवार का ही नहीं, अपितु यू.के. के सम्पूर्ण साहित्यिक समाज का सम्मान बढ़ाया है। श्री मनोज मुंतशिर के विषय में बताते हुए डॉ. गुप्त ने कहा कि इस वर्ष एक यशस्वी युवा कवि को चुना गया है, जिन्होंने हिंदी कविता और शायरी को हिंदी सिनेमा की प्रचलित विधा से न केवल जोड़ा है, अपितु इस माध्यम से नई पीढ़ी के विश्व के करोड़ों युवाओं तक कविता की विधा को पहुँचाने का श्रेष्ठ कार्य किया है। प्रतिष्ठित लेखक एवं नेहरू केंद्र, लंदन के निदेशक डॉ. अमीश त्रिपाठी, ब्रिटिश सांसद श्री वीरेंद्र शर्मा, प्रतिष्ठित लेखिका और वातायन-यू.के. की संस्थापक श्रीमती दिव्या माथुर, एफ़.आर.एस.ए. की उपस्थिति में कार्यक्रम संपन्न हुआ।

अपने समापन भाषण में डॉ. अमीश त्रिपाठी ने पुरस्कृत कवियों को बधाई देते हुए वातायन की नियमित और सार्थक गतिविधियों की भी सराहना की। कार्यक्रम को वैश्विक हिंदी परिवार के फ़ेसबुक पर लाइव प्रसारित किया गया, जिससे विश्व भर के प्रतिष्ठित विद्वान, लेखक, कलाकार और मीडियाकर्मी जुड़े। धन्यवाद-ज्ञापन एफ़.आर.एस.ए. अकादमी-यू.के. की ओर से श्रीमती अन्तरीपा ठाकुर-मुखर्जी ने किया। कार्यक्रम का संचालन यू.के. हिंदी समिति के संस्थापक और ऑक्सफ़ोर्ड बिज़नेस कॉलिज के निदेशक डॉ. पद्मेश गुप्त ने किया।

साभार : साहित्य कुंज.नेट

श्रद्धांजलि

श्रीमती मृदुला सिन्हा

गोवा की पूर्व राज्यपाल

18 नवम्बर, 2020 को प्रसिद्ध साहित्यकार व राजनेता श्रीमती मृदुला सिन्हा का 77 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपका जन्म 27 नवम्बर, 1942 को छपरा गाँव, मुज़फ़्फ़रपुर ज़िला, बिहार में हुआ था।

आपने मनोविज्ञान में एम.ए. करने के बाद बी.एड. किया और उसके पश्चात् मुज़फ़्फ़रपुर के एक कॉलिज में प्रवक्ता का पद संभाला। कुछ समय तक आप मोतीहारी के एक विद्यालय में प्रिंसिपल भी रहीं, परंतु आपने हिंदी साहित्य की सेवा हेतु स्वयं को समर्पित कर दिया। आप सुविख्यात हिंदी लेखिका होने के साथ-साथ भारतीय जनता पार्टी की केन्द्रीय कार्यसमिति की सदस्या रहीं तथा गोवा के राज्यपाल पद पर थीं। आप स्व. श्री अटल बिहारी वाजपेयी के प्रधानमन्त्रित्व-काल में केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड की अध्यक्षा भी रह चुकी हैं। आप मानव संसाधन विकास मंत्रालय के सेंट्रल सोशल वेलफ़ेयर बोर्ड की चेयरपर्सन पद को भी संभाल चुकी हैं।

आपको उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा 'साहित्य भूषण सम्मान' व 'दीनदयाल उपाध्याय पुरस्कार' के अतिरिक्त अन्य कई सम्मानों से विभूषित किया जा चुका है। 'राजपथ से लोकपथ पर' - जीवनी, 'नई देवयानी', 'ज्यों मेहंदी को रंग', 'घरवास', 'सीता पुनि बोलीं' जैसे उपन्यास, 'देखन में छोटे लगें', 'बिहार की लोककथायें-एक', 'बिहार की लोककथायें-दो', 'ढाई बीघा ज़मीन' जैसे कहानी-संग्रह, 'यायावरी आँखों से' तथा 'विकास का विश्वास' जैसे लेख-संग्रह तथा 'मात्र देह नहीं है औरत' जैसे स्त्री-विमर्श आदि आपकी रचनाओं में शामिल हैं। इसके अतिरिक्त आपने अंग्रेज़ी में 'Flames of Desire' नामक अनूदित कृति में अपना योगदान दिया। इससे पूर्व आप 'पाँचवाँ स्तम्भ' के नाम से एक सामाजिक पत्रिका निकालती रही हैं। आपकी पुस्तक 'एक थी रानी ऐसी भी' की पृष्ठभूमि पर आधारित राजमाता विजया राजे सिन्धिया को लेकर एक फ़िल्म भी बनी थी।

साभार : विकिपीडिया

डॉ. मधुकर गंगाधर

6 दिसम्बर, 2020 को हिंदी के प्रख्यात लेखक डॉ. मधुकर गंगाधर का 88 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपका जन्म 7 जनवरी, 1932 को बिहार के पूर्णिया ज़िले के झलारी गाँव में हुआ था। आपने पूर्णिया कॉलिज से इंटर और बी.ए. तथा पटना विश्वविद्यालय से एम.ए. की पढ़ाई की। आप आकाशवाणी के पटना केंद्र के निदेशक भी रहे और साहित्य सम्मेलन की गतिविधियों में पूरी हार्दिकता से सक्रिय रहे। आप पटना आकाशवाणी में रेणुजी के सहयोगी थे तथा इलाहाबाद में ऑल इंडिया रेडियो के निदेशक भी रहे। बाद में आप दिल्ली ऑल इंडिया रेडियो में उप-महानिदेशक बने। 39 वर्ष तक ऑल इंडिया रेडियो में सेवा देने के बाद आप दिल्ली में स्वतंत्र लेखन का कार्य करते रहे। आपने दूरदर्शन के लिए भी अनेक धारावाहिकों का लेखन और निर्देशन भी किया। आपने अनेक विधाओं में लेखन किया है। आपकी प्रकाशित कृतियों में दस कहानी-संग्रह, आठ उपन्यास, चार कविता-संग्रह, तीन संस्मरण पुस्तकें, तीन नाटक और चार अन्य विधाओं की रचनाएँ शामिल हैं। उपन्यास हैं - 'मोतियों वाले हाथ', 'यही सच है', 'उत्तरकथा', 'फिर से कहो', 'सातवीं बेटी', 'गर्म पहलुओं वाला मकान', 'सुबह होने तक' तथा 'जयगाथा', 'धुवान्तर', 'भीगी हुई लड़की', 'नील कोठी'। आपने सौ से अधिक कहानियाँ लिखी हैं, जो चार खण्डों में प्रकाशित हुई हैं। कहानी-संग्रह हैं - 'तीन रंग : तेरह चित्र', 'हिरना की आँखें', 'नागरिकता के छिलके', 'मछलियों की चीख', 'गाँव कसबा नगर', 'गर्म गोश्त : बर्फीली तासीर', 'शेरछाप कुर्सी', 'बरगद', 'सौ का नोट' तथा 'उठे हुए हाथ'। काव्य-संग्रह हैं - 'आकाश-पाताल', 'कविता की वापसी'।

साभार : आज की जन धारा.कॉम

श्री मंगलेश डबराल

9 दिसम्बर, 2020 को वरिष्ठ कवि एवं पत्रकार श्री मंगलेश डबराल का 71 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपका जन्म 14 मई, 1949 को उत्तराखंड के टिहरी गढ़वाल के काफलपानी गाँव में हुआ था। देहरादून से अध्ययन के बाद आप दिल्ली में हिंदी पैट्रियट, प्रतिपक्ष, मध्यप्रदेश कला परिषद्, भारत भवन, जनसत्ता, समय सहारा और नेशनल बुक ट्रस्ट से संबद्ध रहे। आपको 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित किया जा चुका है। 'पहाड़ पर लालटेन', 'घर का रास्ता', 'हम जो देखते हैं', 'आवाज़ भी एक जगह है' और 'नये युग में शत्रु' जैसे काव्य-संग्रह आपकी रचनाओं में शामिल हैं।

साभार : टी.वी9.कॉम

विश्व हिंदी सचिवालय तथा समस्त हिंदी जगत् की ओर से पुण्यात्माओं को भावभीनी श्रद्धांजलि।

प्रधान संपादक	: प्रो. विनोद कुमार मिश्र
संपादक	: डॉ. माधुरी रामधारी
सहायक संपादक	: श्रीमती श्रद्धांजलि हजगैबी-बिहारी
टंकण टीम	: श्रीमती त्रिशिला आपेगाडु, श्रीमती जयश्री सिबालक-रामसर्न, श्रीमती विजया सरजु
पता	: विश्व हिंदी सचिवालय, इंडिपेंडेंस स्ट्रीट, फ़ेनिक्स 73423, मॉरीशस **World Hindi Secretariat, Independence Street, Phoenix 73423, Mauritius**
फ़ोन	: **(230) 660 0800**
ई-मेल	: **info@vishwahindi.com**
वेबसाइट	: **www.vishwahindi.com**
डेटाबेस	: **www.vishwahindidb.com**
फ़ेसबुक पृष्ठ	: **vishwahindisachivalay/**

संपादकीय

प्रतिकूलता में अनुकूलता

प्रकृति के विरुद्ध जाते ही मानवता को भीषण खतरे की आहट सुनायी देने लगती है और सभ्यता के लुप्त होने का आसन्न भय भी सताने लगता है। पिछली कई सदियों ने मनुष्य केंद्रित विश्व को समूची सृष्टि पर विस्तार करते हुए देखा है, जो प्रकृति विरुद्ध है। आज मानवता फिर एक बार इतिहास के सबसे बड़े प्राकृतिक आपदा के सम्मुख पराजित भाव से खड़ी है। हम सभी जानते हैं कि प्रगति का मार्ग प्रतिकूलता से होकर गुज़रता है। भाषा, साहित्य और संस्कृति, प्रतिकूल परिस्थिति में ही अपना विकास करते हैं। अंतरवर्ती प्रवाहित अमूर्त भाव ही तो संस्कृति है, जो हमारी चेतना में समाहित है। उसी भाव को भाषा में निबद्ध कर मूर्तिमान करना आज की अनिवार्यता है। भाषा स्वयं में एक मुखरित संस्कृति है, जो उस संस्कृति के अव्यक्त रूप को व्यक्त करती हुई उसे जीवंत बनाये रखती है। भाषा ही युगों-युगों की सभ्यता और संस्कृति को संचित, संचरित और सिंचित करती हुई भावी पीढ़ी तक ले जाती है। इस प्रकार भाषा के अस्तित्व को व्यक्त करने का प्रथम चरण वाचिक और द्वितीय चरण लिखित है। आदिकाल से हम श्रुति परंपरा के ही संवाहक रहे हैं, इसीलिए वेदों को श्रुति कहा गया है। तदन्तर ऋषियों की चेतनाकाश की अनुभूतियाँ संस्कृत भाषा में छाल, ताम्र, शिला व भोज-पत्र आदि में लिपिबद्ध हुईं। यदि वही लिपिबद्ध न होती, तो प्राचीन संस्कृतियों, सभ्यताओं, घटनाओं और इतिहास के स्वर्णिम और कलंकित पृष्ठ पढ़ने से हम वंचित रह जाते।

किसी भी संस्कृति और सभ्यता के बीज भाषा के गर्भ में छिपे होते हैं। जो भाषा परम्पराओं, मान्यताओं, विचारों, आचरण, स्थापत्य, वास्तु, आदि में मूर्त और अमूर्त रूप में व्यक्ति से लेकर समस्त समाज में परिलक्षित होती है, वही संस्कृति है। संस्कृति मनुष्य के अदृश्य भावों को स्थापत्य, वास्तु व मूर्तिकला के रूप में उकेरी जाती है, फिर परातत्ववेत्ता प्राचीन अवशेषों के आधार पर तत्कालीन युग की संस्कृति और जीवनमूल्यों का मूल्यांकन करते हैं। स्थापत्य, वास्तु और मूर्तिकला के अवशेष जिन्हें पत्थरों पर उकेरा गया है, उसकी भी एक मौन अभिव्यक्ति है। पत्थर भी संस्कृति और सभ्यता के मौन को मुखरित करते हैं। भाषा में भाषित भावना ही मूर्त संस्कृति है, जो बाह्य जगत में दृष्टिगोचर होती है, वही संस्कृति और भाषा का आंतरिक दर्शन है। भाषा बोल कर व्यक्त की जाती है, अर्थात जिसे वाणी से व्यक्त किया जाय वह भाषा है, अन्तर्निहित विचार और अस्तित्व को व्यक्त करने का जो माध्यम है, वह भी भाषा है। पराज्ञान के अनुसार पृथ्वी और अनंत लोकों तक विचारों की आकाश-गंगा का विस्तृत फैलाव है, विचारों की आयु भी अनंत है, क्योंकि इनकी जड़ें भूमा तक फैली हुई हैं। जहाँ से समूची सृष्टि निःसृत हुई है, जो सूक्ष्मातिसूक्ष्म है, उसी में संस्कृति और सभ्यता के बीज छिपे होते हैं। गर्भ से ही इनका विकास और सिंचन होता है। संस्कृति को एक शब्द में समाहित नहीं किया जा सकता। संस्कृति में दृश्य और अदृश्य जगत के भाव, विचार व पञ्च महाभूत गहराई से समाहित हैं। संस्कृति में युगीन आचार-विचार, जीवन-शैली, पर्व, त्योहार, साहित्य संगीत, कला आदि सबका समावेश है।

आज सांस्कृतिक जीवनदायिनी धरोहरों का सदुपयोग और संरक्षण, भौतिकता प्रधान मनोवृत्ति के कारण पूरी निष्ठा से नहीं हो रहा है। सब कुछ दयनीय स्थिति में है, जिसके प्रति युद्ध स्तर पर सजग होने की आवश्यकता है। वस्तुतः संस्कृतिनिष्ठ परम्पराएँ और संस्कार अन्तर्निहित गुणात्मक सत्ता हैं, सभ्यता जिसका व्यावहारिक परिशीलन है। संस्कृति और संस्कार ही वे आंतरिक गुण हैं, जो सभ्य आचरण के रूप में किसी व्यक्ति, जाति समाज और राष्ट्र का निर्माण करते हैं। यद्यपि यह कोई औपचारिक प्रथाओं का परिशीलन मात्र नहीं, वरन इनमें राष्ट्र का स्पंदन है। अनेकत्व में एकत्व की अद्भुत भावना को समेटे संस्कृति हमारी शिराओं में बहती हैं, धर्म, दर्शन, इतिहास, भाषा और कला संस्कृति के संवाहक हैं। मनुष्य के अभ्युदय की कामना हमारी संस्कृति का बीज मन्त्र है। जो सुसंस्कृत करे, वही संस्कृति है। संस्कार, सभ्यता और भाषा की वैचारिक यात्रा लोक से संस्कृति की ओर होती है। संस्कृति तो समाज का वह संविधान है, जो अंतस को सचेत रखती है, जो संचयी होते हुए भी परिवर्तनशील किन्तु प्रगतिशील है। संस्कृति ही शाश्वत की ओर ले जाते हुए वैचारिक उद्घोष या शंखनाद करती है। जिस अंतस में संस्कृति के रूप में सम्पूर्ण जगत बसता है, वहीं वह अपना परिवेश बना ही लेता है। यह संस्कृति और साहित्य की शक्ति और लोक संस्कृति में परिणत होने का ज्वलंत प्रमाण है। यद्यपि यह संस्कृति की शक्ति के आगे शक्तिहीन है, किन्तु एक प्रबल, सत्य और सशक्त विचार क्रांति के लिए पर्याप्त भी है। सांस्कृतिक मूल्यों से जुड़े रहकर ही भाषा और संस्कृति के अन्तःसम्बन्ध को प्रगाढ़ बनाया जा सकता है। यह अटूट सम्बन्ध सृष्टि में आदि से अंत तक प्रवाहित, संवाहित और समाहित रहता है। इतना ही नहीं यह व्यक्ति, समाज और राष्ट्र जीवन की मानसिकता को संचालित और सिंचन कर उसे पल्लवित-पुष्पित कर अनुभूति बनकर अंतस में उतरता भी है। यहाँ केवल माधुर्य का आभास है व सरसता का स्रोत है, जिसमें आंतरिक तृप्ति है तथा और अधिक पाने की प्यास निरंतर रहती है। प्यास और तृप्ति एक साथ चले, तो प्रेम जाग्रत और जीवंत बना रहता है और प्रेम अभिव्यक्ति बन शब्दों में उतर आता है। कर्तव्यों के प्रति सामान्य से कहीं अधिक सजगता और कर्तव्यनिष्ठता स्वयं आती है।

मनुष्य एक जैविक व जटिल संरचना है, जिसकी बाहर की एक परत अन्नमय, दूसरी मनोमय और जो अंतिम आनंदमय है। जब मनुष्य को प्रकृति बल, संकल्प और ज्ञान की शक्ति से सम्पन्न बनाती है, तब प्रकृति की ही प्रेरणा से आत्म-ज्ञान की प्राप्ति होते ही बहुत कुछ अनायास घटित होने लगता है। चेतना जब साधक मन को उर्ध्वमुखी बनाती है, तब कामनाओं की इति हो जाती है। फिर यदि चिंतन को सही दिशा दी जाए, तो वह अंतस में प्रवेश करते ही प्रबोधक बन जाता है, जो किसी तपस्या से कम नहीं होता। जीवन की बाह्य एवं आंतरिक यात्रा समानांतर चलती है। शायद दोनों का यही समीकरण है। स्मृति, कल्पना, स्वप्न और संकल्प, ये चारों हमें अतीत से भविष्य की ओर ले जाते हैं, जिसमें वर्तमान है ही नहीं, जबकि आज के त्रासद काल में वर्तमान ही सब कुछ है। सकारात्मक जीवन का आत्म-नीरिक्षण करना और वर्तमान में व्याप्त त्रासदी से लड़ना प्राथमिक दायित्व बनाना होगा। साहित्य, संगीत, संस्कृति और कला के सहारे जीवन संगीत को सुनना होगा, क्योंकि संगीत की अपनी एक महत्ता है और उसी संगीत के स्वर में मन को उदात्त बनाने वाली संजीवनी भी है, जिसकी मदद से प्राकृतिक आपदा से मिले अवसाद से मुक्ति मिले और फिर ऐसा संसार रचें, जो हमारे अनुकूल हो, जिसमें प्रतिकूलता की गुंजाइश न रहे। हमें देह का बोध हो, जीव का बोध हो और अंत में हमें आत्म का बोध हो। तब हम एकाकार होंगे और द्वैत जो दुख का कारण है, स्वतः समाप्त हो जाएगा और सम्पूर्ण सृष्टि अद्वैतमय हो सुख की पीठिका का निर्माण कर सकेगी। तब जाकर प्रतिकूलता में अनुकूलता की तलाश पूरी हो सकेगी।

प्रो. विनोद कुमार मिश्र
महासचिव

स्वागतम्
महामहिम श्रीमती के. नंदिनी सिंग्ला

19 दिसंबर, 2020 को महामहिम श्रीमती के. नंदिनी सिंग्ला ने मॉरीशस में भारतीय उच्चायुक्त का पदभार ग्रहण किया। मॉरीशस में भारतीय उच्चायुक्त के पद पर नियुक्त होने से पूर्व आप जुलाई 2016 से दिसंबर 2020 तक पुर्तगाल में भारत की राजदूत के रूप में कार्यरत थीं।

विश्व हिंदी सचिवालय भारत सरकार तथा मॉरीशस सरकार की द्विपक्षीय संस्था है, जिसमें भारतीय पक्ष का नेतृत्व कार्यरत भारतीय उच्चायुक्त करते हैं। हमें पूर्ण विश्वास है कि महामहिम श्रीमती के. नंदिनी सिंग्ला के आगमन से मॉरीशस और भारत के संबंध और सशक्त होंगे तथा आप विश्व हिंदी सचिवालय के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होंगी।

विश्व हिंदी सचिवालय की ओर से मॉरीशस में महामहिम श्रीमती के. नंदिनी सिंग्ला का हार्दिक स्वागत है।

स्वागतम्
श्रीमती सुनीता पाहूजा

27 अक्टूबर, 2020 को श्रीमती सुनीता पाहूजा ने भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस में द्वितीय सचिव (हिंदी और संस्कृति) का पदभार संभाला। आप भारतीय उच्चायोग, पोर्ट ऑफ़ स्पेन, त्रिनिडाड एवं टोबेगो, वेस्ट इंडीज़ में द्वितीय सचिव (हिंदी एवं संस्कृति) रह चुकी हैं। विश्वास है कि श्रीमती पाहूजा के आगमन से सचिवालय को मार्गदर्शन तथा प्रगति के नए आयाम प्राप्त होंगे।

विश्व हिंदी सचिवालय की ओर से मॉरीशस में श्रीमती सुनीता पाहूजा का हार्दिक स्वागत है।